सामाजिक संस्था संपूर्णा
(गैर सरकारी संगठन)
समग्र विकास की ओर अग्रसर

"आलेख"

सम्पूर्णा की यात्रा

'संकल्प से सिद्धि'

–डॉ. शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

संकल्प से सिद्धि तो सभी ने सुना है लेकिन यह संपूर्णा ने कैसे किया आइए! मैं आपको बताती हूं। वर्ष 1993 से शुरू हुआ यह सफर अपनी धूल भरी और क्षण–क्षण असमंजस की स्थिति को पार करते हुए वर्ष 2020 तक पहुंचा है। यह सच है कि मैंने समाजशास्त्र से ही पोस्ट ग्रेजुएशन की है। जिस कारण समाज सेवा का बीज जो बचपन से ही मेरे अंदर था। किंतु पूर्ण रूप से ना केवल प्राकृतिक तरीके से फला फूला बल्कि उचित शिक्षा की उर्बरा भी मिली। एक छोटे से बच्चों के अनौपचारिक शिक्षा और परिवार परामर्श केंद्र के रूप में शुरू हुआ संपूर्णा केंद्र बर्ष 2020 तक वट वृक्ष के रूप में उभरा है।

साम्यवादी विचारधारा जहां पर अपने विचारों को फैलाने के लिए उचित शिक्षा–दीक्षा और निर्देश देती है, वही मुझे इस राह में कई बड़े कटु अनुभव हुए। अपने ही लोगों के द्वारा लगातार एक पूर्णतयः विशुद्ध समाज सेवा के प्रकल्प को प्रत्येक क्षण राजनीति से जोड़ने की कोशिश की गई।

27 वर्षों के इस अंतराल में हमने मैक्रो और माइक्रो दोनो स्तर पर अपने प्रोजेक्ट को चलाया। पिछले 8 वर्षों से संपूर्णा सांस्कृतिक प्रदूषण के साथ–साथ लगातार पर्यावरण पर काम कर रही है। संपूर्णा के माइक्रो लेवल के प्रोजेक्ट इसी बिंदु को समर्पित हैं।

वर्ष 2014 में आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने से पहले, के भाषण को आत्मसात करते हुए स्वच्छता अभियान को मुख्य रूप से अपने प्रकल्पो में जोड़ा। महिलाओं के स्वयं सहायता समूह बनाकर उनसे अपने घरों के बाहर सफाई और हरियाली के लिए प्रेरित किया गया। इसके साथ–साथ ही वर्ष 2016 में दिल्ली स्कूल आदर्श शौचालय मिशन के माध्यम से सरकारी स्कूलो के शौचालयों को साफ–सुथरा और प्रयोग हेतु बनाने के लिए निरंतर पूरी दिल्ली में काम किया। स्वयंसेवकों के माध्यम से हर स्कूल के लिए एक स्कूल स्वच्छाग्रही जोड़ा गया। तब ऐसा अनुभव हुआ कि देश और दिल्ली में प्लास्टिक की थैलियां न केवल मनुष्य जाति के लिए अपितु हमारी गाय माता के लिए भी एक जहरीला भोज्य बनी हुई है। अतैव संपूर्णा के माध्यम से हर घर में गली–गली में प्लास्टिक का प्रयोग न करें तथा कपड़े के थैले का प्रयोग करे, say no to plastic & use cotton bag का नारा दिया गया। जन सहायता समूह के माध्यम से घर–घर के पुराने कपड़े एकत्र कर उनसे थैले बनाए गए। सामान्य और सभी विशिष्ट जनों ने इस प्रकल्प को सराहा और हमारा सहयोग किया। तभी 24 मार्च 2020 का कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण देशभर में लॉकडाउन शुरू हुआ। इस जंग में हमारी बहनों ने आगे बढ़कर तुरंत मास्क बनाने का काम शुरू किया। संपूर्णा आज स्वयं सेविकाओं के माध्यम से घर–घर में मास्क बना रही है। कपड़े के थैले बनाए जा रहे हैं।

सोशल मीडिया का सदुपयोग केवल और केवल एक दूसरे को प्रेरित कर कुछ अच्छा करने का माध्यम संपूर्णा द्वारा बनाया गया है। अभी हाल ही में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री परम आदरणीय श्री नितिन गडकरी जी ने भी संपूर्णा के कार्यों की टीवी चैनल पर भुरि–भुरि प्रशंसा की है। उन्होंने कहा है कि संपूर्णा के माध्यम से पुराने कपड़े के थैले बनाए जा रहे हैं तथा साथ ही साथ पुराने कपड़ों की एक–एक कतरन का सदुपयोग कर दरिया बनाने का काम भी संपूर्णा के माध्यम से हो रहा है।

मैं अपने सभी भाईयो और बहनों को इस उत्साहवर्धन के लिए बहुत–बहुत साधुवाद देती हूं साथ ही इस कार्य में मेरे साथ लगे सैकड़ों भाईयों और बहनों को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद देती हूं क्योंकि यह कार्य डॉ. शोभा विजेंद्र द्वारा कभी संभव ही नहीं था। इस संकल्प को सिद्ध करने हेतु संपूर्णा की विशाल टीम दिन–रात प्रयासरत है।

अदृश्य शत्रु कोरोना वायरस से इस लड़ाई में संपूर्णा को जीतना है और हर संभव प्रयास करके महिलाओं के जीवन में एक स्वःरोजगार, स्वावलंबन और सशक्तिकरण का भाव जगाना है।

.....